

Published by:					
NEERAJ PUBLICATIONS Sales Office : 1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006					
E-mail: info@neerajignoubooks.com					
Website: www.neerajignoubooks.com					
Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only Typesetting by: Competent Computers Printed at: Novelty Printer Notes: Printed at: Novelty Printer Notes: Notes: Notes:					
1. For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.					
2. This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.					
3. The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.					
4. Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.					
5. In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.					
6. If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.					
7. The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.					
8. Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.					
9. Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS/NEERAJ IGNOU BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.					
10. Subject to Delhi Jurisdiction only.					
© Reserved with the Publishers only.					
Spl. Note: This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.					
How to get Books by Post (V.P.P.)?					
If you want to Buy NEERAJ IGNOU BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website www.neerajignoubooks.com . You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).					
To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ IGNOU BOOKS You may Visit/Surf our website www.neerajignoubooks.com . No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges. We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).					
NEERAJ PUBLICATIONS					
(Publishers of Educational Books)					
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company) 1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006					
Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501					
E-mail: info@neerajignoubooks.com Website: www.neerajignoubooks.com					

CONTENTS

आरंभ से लेकर आठवीं शताब्दी ई. तक भारत (INDIA : Earliest Times to 8th Century A.D.)

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Buint (11071045 1041 Sotrea Question 1 aper	5)
Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2018 (Solved)	1
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2017 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2016 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2016 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2015 (Solved)	1
Question Paper—June, 2015 (Solved)	1-3
Question Paper—December, 2014 (Solved)	1-4
Question Paper—June, 2014 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2013 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2013 (Solved)	1
Question Paper—December, 2012 (Solved)	1
Question Paper—June, 2012 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2011 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2010 (Solved)	1-2
S.No. Chapterwise Reference Book	Page

पर्यावरण और अनुकूलन का आरंभिक स्वरूप	
1. भारत : प्राकृतिक विशेषताएँ	1
2. भारतीय इतिहास में क्षेत्र : गठन एवं विशेषताएँ	4
3. शिकारी संग्रहकर्ता : पुरातात्त्विक परिप्रेक्ष्य	8
4. कृषि और पशु-पालन का आरंभ	11
हड़प्पा की सभ्यता	
5. पूर्ववर्ती इतिहास, कालानुक्रमिक तथा भौगोलिक विस्तार	15
6. भौतिक विशेषताएँ	19

S.No. Chapter	Page
7. संपर्कों का रूप	24
8. समाज एवं धर्म	27
9. ह्रास और विघटन	30
प्राचीन भारतीय समाज का विकास : 2000 से 100	0 ई॰पू॰
10. ताम्र-पाषाण युग और आरम्भिक लौह युग–I	33
11. ताम्र-पाषाण युग और आरम्भिक लौह युग-II	38
12. प्रारम्भिक वैदिक समाज	41
13. उत्तर-वैदिक युग में परिवर्तन	48
भारत : छठी से चौथी शताब्दी ई॰पू॰ तक	
14. जनपद और महाजनपद	51
15. नगरीय केन्द्रों का उदय	55
16. समाज और अर्थव्यवस्था	58
17. बौद्ध धर्म, जैन धर्म तथा अन्य धार्मिक विचार	62
राज्यतंत्र, समाज और अर्थव्यवस्था : 320 से 200 ई	ेपू॰ तक
18. मगध साम्राज्य का विस्तार	68
19. मौर्य साम्राज्य की अर्थव्यवस्था	74
20. प्रशासनिक संगठन और अन्य शक्तियों के साथ सम्बन्ध	79
21. अशोक की धम्म नीति	85
22. साम्राज्य का विघटन	90
भारत : 200 ई॰पू॰ 300 ई॰ तक	
23. उत्तर-पश्चिमी और उत्तर भारत	96
24. व्यापार तथा शहरीकरण का विस्तार	99
25. धर्म के क्षेत्र में परिवर्तन	102
26. कला तथा वास्तुकला	105
दक्षिण भारत में राज्य एवं समाज : 200 ई॰पू॰ से 3	00 ई॰ तक
27. दक्षिण में आरम्भिक राज्य निर्माण	111
28. दक्षिण भारत में आरम्भिक राज्य की उत्पत्ति (तमिल क्षेत्र)	114
29. कृषक बस्तियों का विस्तार	116
30. व्यापार और शहरी केन्द्रों का विस्तार	120
31. तमिल भाषा और साहित्य का विकास	124

S.No.	Chapter	Page
भारतीय राजतंत्र	ा : 300 ई॰ से 800 ई॰ तक	
32. गुप्त साम्राज्य		126
33. गुप्तकाल : अ	ार्थव्यवस्था, समाज और राजतंत्र	131
34. उत्तर भारत में	गुप्त काल के बाद के राज्य	136
35. दक्कन और द	क्षिण भारत के राज्य	140
प्रारम्भिक मध्यव	काल में संक्रमण	
36. अर्थव्यवस्था म	ों परिवर्तन	144
37. समाज में परि	त्रर्तन	147
38. राजनीतिक व्य	वस्था की संरचना : सामंतों, महासामंतों और शासकों तथा अधिकारियों के अन्य वर्ग	151
39. धर्म के क्षेत्र प	में परिवर्तन	153



QUESTION PAPER

(June – 2019)

(Solved)

आरंभ से लेकर आठवीं शताब्दी ई. तक भारत

समय : 3 घण्टे]

। अधिकतम अंक : 100

नोट : इस प्रश्न पत्र में **तीन खण्ड** हैं। खण्ड-I से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। खण्ड-II से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। खण्ड-III से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए।

खण्ड−I

प्रश्न 1. प्रारंभिक वैदिक समाज की अर्थव्यवस्था तथा समाज की प्रकृति का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-12, पृष्ठ 42, 'अर्थव्यवस्था', 'समाज'

प्रश्न 2. छठी शताब्दी बी.सी.ई. (सामान्य काल से पूर्व) में बौद्ध धर्म के उत्थान के क्या कारण थे? इसकी लोकप्रियता के कारणों का परीक्षण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-17, पृष्ठ 62, 'नए धार्मिक विचारों का उद्भव', 'गौतम बुद्ध और बौद्धधर्म की उत्पत्ति', पृष्ठ-36, 'बौद्धमत का विकास'

प्रश्न 3. दक्षिण भारत में 200 बी.सी.ई. और 300 सी.ई. (सामान्य काल) के मध्य व्यापार और नगरीय केन्द्रों के विस्तार की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-30, पृष्ठ 120, 'अध्याय का विहंगावलोकन'

प्रश्न 4. दक्कन तथा दक्षिण भारत में 20 बी.सी.ई. तथा 300 सी.ई. के मध्य सामाजिक संगठन का विवरण दीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-27, पृष्ठ 113, 'समाज', अध्याय-29, 'सामाजिक संगठन', 'नए तत्व और सामाजिक परिवर्तन'

खण्ड–II

प्रश्न 5. भारतीय उपमहाद्वीप में पुरापाषाण संस्कृति की प्रमुख विशोषताओं तथा इसके विस्तार क्षेत्र का विवरण दीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-3, पृष्ठ 8, 'पुरापाषण युग' प्रश्न 6. हड़प्पा सभ्यता के बाहरी विश्व के साथ संबंधों की प्रकृति का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-7, पृष्ठ 24, 'अन्तर्क्षेत्रीय सम्पर्क' प्रश्न 7. हडुप्पा सभ्यता की समकालीन ताम्रपाषाण संस्कृति पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-10, पृष्ठ-33, 'काले एवं मृदभांड संस्कृति', 'चित्रित धूसर मृदमांड संस्कृति', पृष्ठ-34, 'उत्तरी काली पॉलिश वाली मृद्भांड संस्कृति', 'पश्चिमी, पूर्वी एवं मध्य भारत की ताम्र पाषाणयुगीन संस्कृतियां'

प्रश्न 8. छठी शताब्दी बी.सी.ई. में जनपदों और महाजनपदों के उत्थान की प्रकृति और रचना का विवरण दीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-14, पृष्ठ 51, 'बस्तियों के प्रकार-I : जनपद', पृष्ठ-52, 'बस्तियों के प्रकार-II महाजनपद' प्रश्न 9. गुप्त साम्राज्य के विस्तार और दृढ़ीकरण का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-32, पृष्ठ 127, 'प्रसार एवं सुदुढी़करण'

प्रश्न 10. बादामी के चालुक्य और पल्लवों के उत्थान का विवरण दीजिए। इन दोनों के बीच संघर्षों की प्रकृति का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-35, पृष्ठ 140, 'चालुक्यों, 'पल्लवों और पाण्डयों का उदय', पृष्ठ-141, विभिन्न शक्तियों में टकराव'

प्रश्न 11. गुप्तकाल के पश्चात् भूमि अनुदानों के आरंभ और इनके आर्थिक परिणामों की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-36, पृष्ठ 144, 'आर्थिक परिवर्तनों की व्याख्या', पृष्ठ-145, 'कृषि सम्बन्धों की नवीन विशेषताएं'

www.neerajbooks.com

2 / NEERAJ : आरंभ से लेकर आठवीं शताब्दी ई. तक भारत (JUNE-2019)

प्रश्न 12. प्रारंभिक काल में दक्षिण भारत में भक्ति के विस्तार पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-39, पृष्ठ 153, 'परिचय', 'दक्षिण भारत की ओर भक्ति का प्रसार', 'दक्षिण भारत में भक्ति आन्दोलन', पृष्ठ-154, 'दक्षिण भारत के भक्ति आन्दोलन में प्रतिरोध एवं सुधार और भक्ति आन्दोलन का बाद में रूपांतरण'

प्रश्न 13. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए–

(क) नील घाटी और पश्चिमी एशिया में प्रारंभिक कृषक उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ 11, 'सबसे प्राचीन किसान'

(ख) आजीवक (Ajivikas)

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-17, पृष्ठ 67, 'आजीवक'

(ग) तमिल शौर्य कविताएं

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-31, पृष्ठ 124, 'वर्गीकरण'

(घ) मौखरी राज्य

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-34, पृष्ठ 136, 'मौखरी'

Neeraj Publications www.neerajbooks.com





भारत : प्राकृतिक विशेषताएँ



इतिहास की सम्पूर्ण जानकारी हेतु भूगोल का ज्ञान अत्यावश्यक है। इतिहास को जानने में भूगोल की प्रमुख भूमिका होती है। शुरू से ही मानव और पर्यावरण एक दूसरे को प्रभावित करते आ रहे हैं। विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों यथा; वनस्पति, मिट्टी, वर्षा, जलवायु इत्यादि के सहयोग से मानव अपनी विकास की कहानी रचता आ रहा है। इन प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर मानव लगातार विकास की सीढ़ियाँ चढ़ता आ रहा है। प्रकृति ने मानव को आरम्भ से ही संरक्षण दिया है। उसे खाने के लिए फल, कंद-मूल, पीने के लिए पानी तथा जीवन के लिए स्वच्छ वातावरण प्रदान किया है। मानव और प्रकृति दोनों में अन्योन्य सम्बन्ध है। इसलिए भारत के अतीत को जानने के लिए उसका भूगोल जानना आवश्यक हो जाता है, जिसने भारतीय इतिहास को प्रभावित किया। अत: इस इकाई में भारतीय उपमहाद्वीप की प्राकृतिक विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है, जिसने इतिहास के निर्माण और विकास में उल्लेखनीय भूमिका अदा की है।

्अध्याय का विहंगावलोकन**्र**े

💵 प्राकृतिक भूगोल और इतिहास

प्राकृतिक विविधताओं (वर्षा, जल, मिट्टी और स्थलाकृति) ने मानव के विकास और उसकी संस्कृति में भी विविधता उत्पन्न की है। देश के अलग-अलग क्षेत्रों में सांस्कृतिक विकास भी अलग-अलग हुआ है। भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व, खान-पान, रहन-सहन, पहनावा भी भिन्न-भिन्न है। किसी क्षेत्र की मिट्टी अधिक उपजाऊ है तो वहाँ का जनसंख्या घनत्व अधिक है; कहीं की मिट्टी अनुर्वरक है तो वहाँ जनसंख्या घनत्व विरल है। पठारी क्षेत्रों में जनसंख्या बिखरी अवस्था में मिलती है। आरम्भिक इतिहास में मगध ने सबसे अधिक विकास किया तो इसका कारण उपजाऊ मिट्टी और प्राकृतिक वनस्पति ही था। पास के जंगलों से हाथी और लौह-अयस्क प्राप्त होते थे, जिन्होंने मगध को तीव्र गति से आगे बढ़ने में योगदान दिया। कृषि से सम्बद्ध सिंचाई का तरीका भी भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न है। अपनाए गए भिन्न-भिन्न तरीके इस बात पर निर्भर करते हैं कि ये किस क्षेत्र में कितने उपयोगी हैं।

इसी प्रकार खान-पान तथा पहनावा के निर्धारण में भी पर्यावरण का प्रमुख हाथ रहता है। ठंडे प्रदेश के निवासी गर्म वस्त्र तथा गरिष्ठ भोजन का प्रयोग करते हैं, जबकि गर्म प्रदेश के लोग हल्के वस्त्र और हल्का भोजन अपनाते हैं। गंगा के डेल्टा मैदान अधिक उर्वर हैं। इसी कारण यहां हमेशा उन्नत संस्कृतियों ने जन्म लिया। भारतीय उपमहाद्वीप की भोजन सम्बन्धी आदतों या वस्त्र शैली को यहाँ के प्राकृतिक भूगूल के सन्दर्भ में समझने में सुविधा होगी।

पर्यावरण और मानव बस्तियाँ

मानव बस्तियों के विकास में पर्यावरण का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। किसी भी सभ्यता का विकास नदियों के किनारे तथा उपजाऊ क्षेत्र में ही हुआ। उदाहरणार्थ, हड़प्पा, मेसोपोटामिया, सुमेरियन जैसी सभ्यताएँ देखी जा सकती हैं। वर्तमान में हालाँकि यहाँ वर्षा की मात्रा कम होती है फिर भी सभ्यता यहीं फली-फूली। इसका कारण यह है कि आज से लगभग 4 हजार वर्ष पहले यहाँ की जलवायु आज जैसी नहीं थी। विभिन्न तथ्यों से यह सिद्ध हो चुका है कि वहाँ पहले अधिक वर्षा होती थी तथा वह स्थान मानव समाज के लिए आदर्श था।

इसी प्रकार अत्यधिक उपजाऊ जमीन, पर्याप्त वर्षा, लोहे की खान, लकड़ी के अच्छे स्रोत, नदियों के द्वारा व्यापार की सुविधा इत्यादि ने मगध साम्राज्य को सफल बनाया। इन्हीं कारणों से गांगेय प्रदेश अन्य प्रदेशों से अत्यधिक विकसित था। मगध की राजधानी

www.neerajbooks.com

2 / NEERAJ : भारत का इतिहास : प्राचीन काल से 8वीं सदी ई. तक

पाटलिपुत्र बनी, जिसकी महत्ता सदियों तक बनी रही। पाटलिपुत्र के उत्थान और पतन के कारणों में भौगोलिक परिस्थितियों की प्रमुख भूमिका है। उदाहरण के लिए गंगा, सोन, गंडक नदियाँ पाटलिपुत्र को प्राकृतिक संरक्षण देती थीं तथा ये नदियाँ व्यापार का मार्ग प्रदान करती थीं, जिससे पाटलिपुत्र का उत्थान हुआ, इन्हीं नदियों में लगातार बाढ़ आने तथा इनके मार्ग बदल जाने के कारण पाटलिपुत्र का महत्त्व कम हो गया।

भौगोलिक नियत्ववाद के विरुद्ध तर्क

भौगोलिक ज्ञान के कारण सांस्कृतिक विकास और विभिन्न शैलियों को समझने में मदद मिलती है, किन्तु भूगोल को एक मात्र नियामक के रूप में नहीं लिया जा सकता, क्योंकि मानव विकास में प्राकृतिक प्रभाव स्थाई नहीं होता। मानव विकास की गति खुद तय करता है। वह अपने अनुभव और तकनीक द्वारा प्राकृतिक सीमाओं का उल्लंघन करता है और उस पर विजय प्राप्त करता है। तकनीकी विकास के कारण मानव के विकास में भूगोल की भूमिका कम हो जाती है। आरम्भ में मानव जंगली कंद-मूल तथा शिकार पर जीवित रहे, किन्तु लोहे की खोज और उससे बने औजारों ने उन्हें मैदानी भागों में लाने में सहायता की और वे गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में कृषक बन गए।

💵 आधारभूत भू-आकृतिक विभाजन

भू–आकृतिक लक्षणों के आधार पर भारतीय उप-महाद्वीप को तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

- (i) हिमालय के पर्वतीय प्रदेश
- (ii) गंगा-सिन्धु के मैदान
- (iii) प्रायद्वीपीय भारत (पठार)

नए सर्वेक्षण से पता चला है कि हिमालय की ऊँचाई अब भी बढ़ रही है। बर्फ पिघलने से गंगा, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र का प्रवाह हमेशा बना रहता है तथा शृंखलाओं के कटने और भूमि के कटाव के कारण जलोढ़ मिट्टी मैदानों में जमा होती रहती है। उत्तर भारत का कछारी मैदान जो कि 3200 किमी. लम्बा और 320 किमी. चौड़ा है, इसी मिट्टी से बना है। सिन्धु मैदान में ही भारत की प्रथम सभ्यता फली-फूली। उत्तर के मैदान और प्रायद्वीपीय भारत को मध्य भारत अलग करता है। मध्य क्षेत्र का विस्तार 1600 किमी. में विस्तृत है। मध्यवर्ती क्षेत्र में सतपुड़ा, विंध्य और छोटा नागपुर के पठार शामिल हैं। जो बंगाल, बिहार और उड़ीसा में विस्तृत हैं। इस क्षेत्र को चार भागों में (*i*) जयपुर और उदयपुर की भूमि (*ii*) मालवा का पठार (*iii*) नागपुर का क्षेत्र और (*iv*) छत्तीसगढ़ के मैदान में बाँटा जा सकता है।

मध्य भारत के दक्षिणी सिरे पर प्रायद्वीपीय भारत फैला है, जो पठारी प्रदेश है। कृष्णा, कावेरी, महानदी और गोदावरी इस प्रदेश की प्रमुख नदियाँ हैं। इन नदियों से बने डेल्टा ने मानव को यहाँ बसने के लिए आकर्षित किया। यहाँ की दो नदियां—नर्मदा और ताप्ती पश्चिम की ओर बहकर अरब सागर में गिरती हैं। दक्कन का पठार इस भाग की मुख्य विशेषता है। इस भाग की काली मिट्टी विशेष रूप से उल्लेखनीय है जो काफी उपजाऊ है। यह भाग कपास की उपज के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस भाग में आरर्रोभक कृषि संस्कृतियां (ताम्र-पाषाण संस्कृति) उदित हुई। प्रायद्वीपीय भारत की उत्पत्ति में नीलगिरि और कार्डोमोम पहाड़ियों का प्रमुख योगदान है।

💵 क्षेत्रीय प्राकृतिक विशेषताएँ

क्षेत्रीय प्राकृतिक विशेषताओं के अन्तर्गत भाषा–आधारित वर्गीकरण आते हैं, जो निम्नलिखित हैं– हिमालय और पश्चिमी सीमा प्रदेश-(i) पूर्वी हिमालय (ii) पश्चिमी हिमालय (iii) मध्यवर्ती हिमालय-इन तीन भागों में हिमालय को वर्गीकृत किया जा सकता है।

पूर्वी हिमालय का विस्तार ब्रह्मपुत्र के पूर्व में असम से चीन तक विस्तृत है। हिमालय के इस भाग के मार्ग दुर्गम हैं फिर भी मार्ग अवरुद्ध नहीं हुआ। मध्यवर्ती हिमालय भूटान से चिगाल तक विस्तृत है। इसी प्रदेश से भारत और तिब्बत के मध्य व्यापार चलता रहा। हिन्दुकुश हिमालय से दक्षिण-पश्चिम अफगानिस्तान तक विस्तृत है। खेबर व अन्य दर्रे तथा काबुल नदी इस क्षेत्र को सिन्धु के मैदान से जोड़ते हैं। अफगानिस्तान का शोर्तुघोई जो हड़प्पाकालीन व्यापारिक केन्द्र था, इसकी पुष्टि करता है। मकरान जो ब्लूचिस्तान का तटवर्ती क्षेत्र है, मानव बस्तियों के लिए कभी उपयुक्त नहीं रहा। अफगानिस्तान और भारत के मैदानों को ईरान और मध्य एशिया से जोड़ने वाले सभी मार्ग खेबर, बोलन और गोमल दर्रे से होकर जाते हैं। शक, कुषाण, यूनानी इत्यादि हमालवर इन्हीं मार्गों का प्रयोग कर भारत में दाखिल हए थे।

सिन्धु का मैदान-इस मैदान को पंजाब और सिन्धु दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। पाँच नदियों वाले भू-भाग को पंजाब कहा जाता है। सिन्धु की पाँच सहायक नदियों ने इस क्षेत्र को उपजाऊ बनाया तथा मानव बस्ती का भरण-पोषण किया। इस क्षेत्र में अनेक संस्कृतियां एकीकृत होती रही हैं। सिन्धु प्रदेश का विकास सिन्धु का निचला हिस्सा और डेल्टा ने मिलकर किया है। यहाँ वर्षा की मात्रा कम है, किन्तु जलोढ़ मैदान उपजाऊ हैं। यह क्षेत्र उत्तर-पश्चिम में ब्लूचिस्तान की पहाड़ियों तथा दक्षिण-पूर्व में रेगिस्तान से घिरा है। इस क्षेत्र के गुजरात से ऐतिहासिक सम्बन्ध रहे हैं। हड़प्पा संस्कृति के दो नगर हड़प्पा और मोहनजोदड़ो क्रमश: पंजाब और सिन्धु में ही अवस्थित हैं।

गंगा का उत्तरी मैदानी क्षेत्र-गंगा के इस मैदानी क्षेत्र को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-

(i) ऊपरी क्षेत्र

- (ii) मध्य क्षेत्र CO
- (*iii*) निचला क्षेत्र

मध्य उत्तर प्रदेश के ऊपरी-मैदान और पश्चिम में ही हड़प्पा संस्कृति का विकास हुआ। यह क्षेत्र चित्रित धूसर मृद्भांड और भूरे मृद्भांड संस्कृति का केन्द्र स्थल रहा है। यही मगध, काशी, कोसल साम्राज्यों का आविर्भाव हुआ। यह क्षेत्र नागरिक जीवन और अर्थव्यवस्था का केन्द्र रहा। गंगा के मैदान का मध्य और ऊपरी क्षेत्र क्रमश: मध्यम भारत को पर्वत शृंखलाओं और हिमालय श्रेणियों से सीमाबद्ध होता है। निचला क्षेत्र (बंगाल का विस्तृत मैदान) गंगा और ब्रह्मपुत्र द्वारा लाई गई जलोढ़ मिट्टी से निर्मित है। यह भारी वर्षा के कारण दलदल है। लौह-तकनीक के विकास के कारण इस उर्वर क्षेत्र का प्रयोग शुरू हुआ। विशिष्ट पर्यावरण के कारण यहाँ लोग मछली का प्रयोग भोजन के आवश्यक अवयव के रूप में करते हैं।

गंगा के मैदान ने अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक जनसंख्या को आकर्षित किया है। आरम्भ से ही यह भारतीय सभ्यता का केन्द्र रहा। वर्तमान में भी इस क्षेत्र की उपयोगिता ज्यों-की-त्यों बनी हुई है। लगभग 600 किमी. में विस्तृत असम की घाटी सांस्कृतिक रूप से बंगाल से अधिक सम्बद्ध है।

पूर्वी, पश्चिमी और मध्य भारत—मध्य भारत एक ऐसा पर्वतीय प्रदेश है, जहाँ पहाडियों की ऊँचाई अधिक नहीं है। इन्हें

www.neerajbooks.com

भारत : प्राकृतिक विशेषताएँ / 3

द्वारा पूर्वी और तटवर्ती मैदानों का विभाजन होता है। इसके क्षेत्र तमिलनाडु में भी आते हैं, जिसके तटवर्ती जिलों में चावल की अच्छी पैदावार होती है। कावेरी मैदान और इसका डेल्टा इसका केन्द्र है। मौसमी नदियाँ होने के कारण आरम्भ से ही लोग सिंचाई के लिए तालाबों पर निर्भर रहते आ रहे हैं।

इस क्षेत्र के प्राचीन साहित्य 'संगम साहित्य' में यहाँ की प्राकृतिक विविधताओं का उल्लेख है। पश्चिमी तटवर्ती मैदान वर्तमान के केरल राज्य तक फैला हुआ है। यहाँ धान, काली मिर्च तथा अन्य मसालों का उत्पादन होता है। ये क्षेत्र भी गंगा के मैदान की तरह अधिक आबादी वाले हैं।

(बोध प्रश्न)

प्रश्न—मगध के उत्थान की उत्तरदायी प्राकृतिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिये।

उत्तर—मगध साम्राज्य की सफलता और इस साम्राज्य द्वारा स्थापित राजनीतिक प्रभुत्व में कई तत्त्व सहयोगी बने। इनका वर्णन निम्न प्रकार है—

- (i) अत्यधिक उपजाऊ भूमि,
- (ii) पर्याप्त वर्षा और उससे होने वाली धान की वार्षिक अच्छी फसल होना,
- (iii) लोहे की खानों तथा छोटानागपुर पठार के पत्थर और लकड़ी के स्रोतों का निकट स्थित होना,
- (iv) नदियों द्वारा पर्याप्त संचार और व्यापार की सुविधा उपलब्ध कराना,
- (v) मानव बस्तियों की निकटता और निरंतरता।

उपर्युक्त तथ्यों ने आसानी से उत्तरी गांगेय मैदान पर विजय प्राप्त करने में सहायता की। इन्हों कारणों से सिंधु-गांगेय का मैदानी प्रदेश, कृषि उत्पादकता और जनसंख्या की दृष्टि से अन्य प्रदेशों से आगे था। उत्तरी मैदानों की ओर सीमाई विस्तार से भारतीय सर्वोच्चता को स्थापना का आधार मिला। मगध राज्य का भारत पर आधिपत्य का आधार उसकी उत्तरी मैदानों की विजय थी। इन मैदानों में वर्षा, वनस्पति, सहज संचार सुविधा और अन्य प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता ने मगध साम्राज्य को शक्तिशाली बनाने में सहायता प्रदान की।

मगध के राजनीतिक प्रभुत्व की वृद्धि से इसकी राजधानी पाटलिपुत्र, उत्तरी भारत की राजधानी बन गई। साम्राज्यिक राजधानी के रूप में पाटलिपुत्र का महत्त्व कई शताब्दियों तक बना रहा। पाटलिपुत्र के उत्थान के अनेक भौगोलिक कारण हैं। प्रारंभिक दिनों में गंगा, सोन और गंडक नदियाँ उसे प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान करने के साथ-साथ व्यापार और परिवहन की सहज सविधाएँ देती थीं।

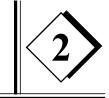
घाटियों और प्रपातीय ढाल विभाजित करते हैं। यहाँ के पर्वतों का विस्तार पूर्व से पश्चिम की ओर है। अरावली पर्वत शृंखलाएँ राजस्थान को दो भागों में विभाजित करती हैं। अरावली के पूर्व का भाग काफी उपजाऊ है। यह क्षेत्र ताम्र-पाषाण युगीन बस्तियों का है। भौगोलिक अवस्थाओं से ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र ने हड़प्पा और दूसरी ताम्र-युगीन सभ्यताओं के मध्य सेतु का काम किया होगा। इसके पूर्व में छत्तीसगढ़ का उपजाऊ क्षेत्र है। अधिक वर्षा के कारण यहाँ धान की पैदावार अच्छी होती है।

मध्य क्षेत्र में दक्षिण बिहार, पश्चिमी उड़ीसा और पूर्वी मध्य प्रदेश आते हैं, जो आदिवासी बहुल क्षेत्र हैं। मध्य भारत के पश्चिमी क्षेत्र पर गुजरात स्थित है। गुजरात का मध्यवर्ती प्रायद्वीप काठियावाड़ कहलाता है। कच्छ का रन इसका एक अन्य प्राकृतिक क्षेत्र है। यह क्षेत्र हड़प्पा काल से ही लगातार प्राचीन बस्तियों का क्षेत्र रहा है। इस सभ्यता के विस्तार का मुख्य कारण सिंधु नदी से इसकी निकटता है। यहाँ के मैदान नर्मदा, ताप्ती, माही, साबरमती, नदियों द्वारा लाई गई मिट्टी से बने हैं। अपनी लम्बी तटरेखा के कारण यह क्षेत्र आज भी विदेशी व्यापार का केन्द्र बना हुआ है। मध्य भारत के पूर्वी छोर पर तथा गंगा डेल्टा के दक्षिण-पश्चिम में उड़ीसा के तटवर्ती मैदान हैं। यहाँ पहली सदी में सांस्कृतिक विकास तीव्र गति से हुआ।

प्रायद्वीपीय भारत-प्रायद्वीपीय भारत की सीमाओं का निर्धारण इसको घेरने वाले दक्कन के पठार और तटवर्ती मैदान करते हैं। दक्कन का पठार तीन भागों में बँटा हुआ है। ये भाग आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र में आते हैं। महाराष्ट्र में दक्कन पठार का उत्तरी भाग शामिल है। महाराष्ट्र और आन्ध्र के मध्य सीमा प्राकृतिक रूप से निर्धारित लगती है। यह सीमा उपजाऊ काली मिट्टी के वितरण के आधार पर बनी है। अर्थात महाराष्ट्र में सीमा के इस ओर काली मिट्टी तथा सीमा के उस पार तेलंगाना में लाल मिट्टी है। पर्यावरण भिन्नता का प्रारंभिक बस्तियों पर प्रभाव सबसे अधिक है। दक्षिण-पश्चिम आन्ध्र में आरंभिक काल में पशुचारण को अपनाया गया, तो उत्तरी दक्कन में कृषि को। दक्षिण-पश्चिम का हिस्सा कर्नाटक में आता है। दक्कन लावा का विस्तार यहाँ तक नहीं है। इस क्षेत्र का दक्षिण भाग मानव बस्तियों के लिए अधिक उपयक्त है।

आन्ध्र प्रदेश में तेलंगाना, उपजाऊ तटवर्ती मैदान, रायल सीमा इत्यादि उपक्षेत्र सम्मिलित हैं। तेलंगाना की लाल मिट्टी अनुर्वर है, इस पर ज्वार, दलहन, तिलहन इत्यादि की पैदावार होती है। आन्ध्र प्रदेश में पूर्वी घाट और तटवर्ती मैदान (कृष्णा-गोदावरी डेल्टा) शामिल हैं जो चावल प्रधान क्षेत्र हैं। रायचूर दोआब की तरह यह क्षेत्र भी प्राचीन साम्राज्यों पल्लव और चालुक्य के बीच निरंतर संघर्ष का केन्द्र रहा। सुदूर दक्षिण–सुदुर दक्षिण में दक्कन का पठार नीलगिरि और

कार्डामोम पहाड़ियों के रूप में विभाजित हो जाता है। इन पहाड़ियों



भारतीय इतिहास में क्षेत्र : गठन एवं विशेषताएँ

(परिचय)

पिछले अध्याय में यह बताया गया है कि भारतीय उपमहाद्वीप का निर्माण कई क्षेत्रों के मिलने से हुआ है तथा प्रत्येक क्षेत्र की अपनी-अपनी सांस्कृतिक विशेषताएँ थीं। इस अध्याय में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि भारतीय इतिहास के विभिन्न चरणों को समझने के लिए भौगोलिक क्षेत्र की जानकारी क्यों जरूरी है, इन क्षेत्रों का उदय कैसे हुआ तथा प्रत्येक क्षेत्रों में अन्तर (भिन्नता) किस प्रकार की थी। क्षेत्रों के गठन की प्रक्रिया, काल व स्थान आधारित भारतीय समाज के उद्भव तथा उपमहाद्वीप के गठन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले क्षेत्रों की जानकारी हेतु, क्षेत्रीय परिवर्तन के कारण, क्षेत्रों का महत्त्व, क्षेत्रों की अणीबद्धता इत्यादि पर ध्यान देना आवश्यक है।

(अध्याय का विहंगावलोकन

💵 क्षेत्रीय परिवर्तन के कारण

क्षेत्रों की संस्कृतियों के मध्य विभिन्नताओं के साक्ष्य खाद्य उत्पादन के लिए संसाधनों के आरंभ के साथ ढूँढे जा सकते हैं। नदी घाटी क्षेत्रों में कृषि अर्थव्यवस्था की शुरुआत हजारों वर्ष पूर्व हो चुकी थी। मेहरगढ जैसे स्थानों में इस अर्थव्यवस्था का आरंभ लगभग 6000 ई॰ पूर्व में ही हो गया था। इसके पश्चात उत्तर प्रदेश के कोलडिहवा तथा बिहार के चिरांद में क्रमश: 5 हजार और 3 हजार ई॰ पूर्व के कृषि साक्ष्य प्राप्त होते हैं। गंगा घाटी में कृषक गाँव दूसरी सहस्राब्दी के मध्य से मिलते हैं, जहाँ नियोजित कृषि होती थी। पहली सहस्राब्दी ई॰ पूर्व के मध्य में इसी क्षेत्र में व्यापार-वाणिज्य के साक्ष्य तथा नगरों के उदय के साक्ष्य मिलते हैं। इसी तरह कृष्णा, कावेरी, गोदावरी के क्षेत्रों में भी कृषक अर्थव्यवस्था तेजी से फैलती गई। इसके विपरीत बंगाल, उडीसा, गुजरात, असम आदि क्षेत्र इस विकास कार्य से कटे रहे। इनका विकास काफी देर से आरंभ हआ। अत: इन क्षेत्रों में बदलाव की प्रक्रिया का दौर शुरू हुआ तो अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा इनके बीच समय का लम्बा अन्तराल था, साथ ही इनके गठन के स्वरूप में भी स्पष्ट अन्तर था।

ऐतिहासिक क्षेत्रों के उदय की असमान प्रक्रियाएँ

क्षेत्रों के असमान विकास को ऐतिहासिक स्थितियों द्वारा समझा जा सकता है। जैसे, तीन हजार ईसा पूर्व के उत्तरार्द्ध में गुजरात में मध्य पाषाणकाल की संस्कृति विद्यमान थी जबकि इसी समय दक्कन के क्षेत्रों में नव पाषाणकालीन पशुपालन संस्कृतियां विद्यमान थीं। यह तथ्य ज्ञातव्य है कि इसी काल में अन्य क्षेत्रों में हड़प्पा जैसी सुविकसित नगरीय संस्कृति भी विद्यमान थी। एक ओर सिन्धु के क्षेत्रों में खानाबदोश लोग तीसरी सहस्राब्दी में बसने लगे थे, वहीं दूसरी ओर दक्कन, तमिलनाडु, उड़ीसा, आन्ध्र प्रदेश और गुजरात के लोगों ने लौह युग में प्रवेश किया।

लोहे की खोज ने कृषि आधारित भौतिक संस्कृति की शुरुआत की। तीसरी सहस्राब्दी में उत्तरी और मध्य भारत में सांस्कृतिक समानता दिखाई देती है।

अशोक के शिलालेखों के वितरण के कारण भी सांस्कृतिक समानता संभव हुई होगी। दक्षिण भारत तथा दक्कन के सांस्कृतिक विकास का आरंभिक चरण 200 ई॰ पूर्व से 300 ई॰ पूर्व तक था। यह जानकारी खुदाई से प्राप्त साक्ष्यों द्वारा पृष्ट होती है।

मृत्तकला प्रमाण–विभिन्न संस्कृतियों की पहचान उनकी मृद्भांड के आधार पर आसानी से हो जाती है। इन मृद्भांडों में गेरुआ चित्रित मृद्भांड 1000 ई॰ पूर्व, चित्रित धूसर मृद्भांड 800-400 ई॰पू॰, काले व लाल मृद्भांड इनके बीच के काल के तथा उत्तरी काले चित्रित मृद्भांड 500-600 ई॰ पूर्व के माने जाते हैं। इनमें से प्रथम तीन मृद्भांड गंगा घाटी और दोआब क्षेत्रों से प्राप्त हुए हैं, जबकि अन्तिम मृद्भांड (उत्तरी चित्रित) उत्तरी मैदान से मध्य भारत और दक्कन तक विस्तृत रूप से प्राप्त होते हैं। इन मृद्भांडों के वितरण से संस्कृतियों की सीमाओं तथा उनके विस्तार से सम्बद्ध जानकारी मिलती है।

साहित्यिक प्रमाण—वैदिक काल का भौगोलिक केन्द्र सप्तसिंधु तथा भारत-गंगा की घाटी का क्षेत्र था। उत्तर वैदिक काल में यह स्थान दोआब क्षेत्र ने ग्रहण कर लिया। बुद्ध काल में मध्य गंगाघाटी अर्थात मगध, कोसल में भौतिक और भौगोलिक विस्तार समानांतर चलता रहा। राष्ट्र शब्द का पहली बार प्रयोग उत्तर वैदिक काल में प्राप्त होता है। बुद्ध काल में सोलह (16) महाजनपदों का उदय हुआ। इनमें से अधिकतर (गांधार, अवंती और अस्मक को छोड़कर) ऊपरी और मध्य गंगा घाटी में स्थित थे। कलिंग का पहली बार पाणिनि ने पाँचवीं सदी ईसा पूर्व में वर्णन किया। इस समय तक सुदूर दक्षिण का तमिल प्रदेश अभी ऐतिहासिक काल में प्रविष्ट नहीं हुआ था।

💵 भारतीय इतिहास में क्षेत्रों की महत्ता

आरम्भ से ही सभी क्षेत्रों के सामाजिक संगठन की इकाई गाँव रहे हैं। इन क्षेत्रों में नव पाषाण युग एवं ताम्र पाषाण युग से लेकर हमेशा बस्तियों के होने के प्रमाण हैं। क्षेत्रीय बस्तियों की असमानता